डॉB केनेथ मैथ्यूजÆ उत्पत्तिÆ सत्र ĊबीÆ
द गार्डन स्टोरीÆ भाग Č

© 2024 केनेथ मैथ्यू और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3बी, द गार्डन स्टोरी, उत्पत्ति 2:4-3:24 है। सत्र 3, भाग 2।

हम अध्याय 2, श्लोक 24 और 25 के अंत से शुरू करते हैं। अध्याय 2 में बगीचे की कहानी में पुरुष और महिला के लिए एक फलदायी, सुंदर और लाभकारी वातावरण का चित्रण किया गया है क्योंकि भगवान ने उन्हें प्रजनन और बगीचे की खेती करने के लिए इस बगीचे में रखा है।

इसलिए, जब हम श्लोक 24 पर आते हैं, तो हमें पुरुष और महिला के एक साथ वापस आने का चित्रण मिलता है। हम कह सकते हैं कि पुरुष और महिला एक ही चीज़ से बनाए गए थे, और अब हमें बताया गया है कि वे एक आकृति के रूप में अपने यौन संबंधों के माध्यम से एकजुट हैं, एक साथ वापस आने के प्रतीक के रूप में जैसे कि वे एक इकाई थे। अब, इसका मतलब यह नहीं है, और मैं जल्दी से कहना चाहता हूँ, कि वे अपने व्यक्तित्व को त्याग देते हैं और पुरुष और महिला के रूप में अपनी विशिष्टता को त्याग देते हैं, बल्कि यह कि वे जो करते हैं वह यह है कि वे ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के महान उद्देश्य के लिए एक साथ आते हैं जैसा कि हमने अध्याय 1 में पाया, जहाँ श्लोक 28 में, ईश्वर ने मानवता को प्रजनन करने और उसके नाम पर व्यायाम करने, सांसारिक दुनिया पर शासन करने की क्षमता के साथ आशीर्वाद दिया है।

श्लोक 24 में लिखा है, इस कारण से, एक आदमी अपने पिता और माँ को छोड़ देगा और अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे एक तन हो जाएँगे। तो, आप देखेंगे कि वहाँ छोड़ना है और फिर अनुवाद एकजुट होना है। यह एक ऐसी भाषा है जिसका अनुवाद जुड़ना हो सकता है।

मुझे शब्द 'क्लीविंग' पसंद है। छोड़ना और चिपकना। छोड़ना और चिपकना।

हिब्रू शब्द छोड़ना और चिपकना ऐसे शब्द हैं जो वाचा के संदर्भ में पाए जाते हैं। वाचा को हम एक रिश्ते के रूप में समझते हैं। यह कोई लेन-देन नहीं है, बल्कि यह एक रिश्ता है, और यही वह है जो हम पुरुष और महिला के साथ रखते हैं।

वे एक शरीर बनकर उस मिलन के लिए परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता, आपसी समर्पण और आपसी प्रेम का एक अनूठा वाचा संबंध बनाते हैं। और इसलिए एक नया बंधन, एक नया मिलन, एक नई वाचा प्रतिबद्धता बनाने के लिए पिता और माता से मूल वाचा परिवार से अलग होना पड़ता है। और ऐसा करने में, वे, बदले में, हम पाएंगे, एक पिता और एक माँ बन जाएंगे जो अपने बच्चों में खुद को पुन: पेश करेंगे।

और इसलिए, इसका मतलब है कि परिवार के समर्थन का एक नेटवर्क होगा। अब, जैसा कि हम हिब्रू संस्कृति और रीति-रिवाजों से जानते हैं, पिता और माता को छोड़ने का मतलब पिता और माता का सम्मान करना बंद करना नहीं है, बल्कि यह है कि जीवनसाथी के प्रति अधिक वफ़ादारी दी जाती है। वफ़ादारी में जीवनसाथी सबसे पहले आता है, और फिर

परिवार और कबीले और जनजाति के सगे-संबंधी उन प्रत्येक क्षेत्रों के प्रति विफ़ादारी जीवनसाथी के प्रति प्रतिबद्धता से बढ़ती है।

और फिर वे एक शरीर बन जाते हैं। अब, श्लोक 25 हमें आगे क्या होने वाला है, इसके लिए तैयार कर रहा है। और वह यह है कि आदमी और उसकी पत्नी, हिब्रू पाठ में आदमी और उसकी स्त्री, दोनों नग्न थे।

और फिर भी, कोई शर्म नहीं थी। अब यह स्पष्ट रूप से उस पाप के समय के बाद के परिप्रेक्ष्य से पढ़ा जा रहा है जो पुरुष और महिला द्वारा किया जाता है। क्योंकि जाहिर है कि आदम और हव्वा नहीं जानते थे कि पिता और माता क्या हैं।

आदम और हव्वा ने कभी बच्चे को जन्म नहीं दिया। हव्वा कभी गर्भवती नहीं हुई। और इसलिए यह बात घटना के बाद के परिप्रेक्ष्य से कही गई है।

और बाद के समय के पाठकों के लिए जो उल्लेखनीय है, जब पेंटाटेच एक साथ आता है, जैसा कि हमने पहले मूसा के समय में और जब मूसा हिब्रू लोगों की पहली पीढ़ी के साथ जंगल में था, तो जो उल्लेखनीय है वह यह है कि वे नग्न थे। और उनके नग्न होने से कोई शर्म नहीं जुड़ी है। खैर, यह उस आदमी और औरत के साथ जो हम पाते हैं, उसके विपरीत होने जा रहा है, जो अपने पाप के बाद, हमें श्लोक 7 में बताया गया है, कि उन दोनों की आँखें खुली थीं, और उन्हें एहसास हुआ कि वे नग्न थे।

और उन्होंने अपनी नग्नता से जुड़ी शर्म को दूर करने के लिए कदम उठाए। मुझे लगता है कि वे अपने पति या पत्नी के साथ अपनी नग्नता पर शर्मिंदा थे और निश्चित रूप से भगवान की उपस्थिति में भी शर्मिंदा थे। इसलिए, उन्होंने अंजीर के पत्तों को एक साथ सिल दिया और अपने लिए आवरण बना लिए।

तो, यह उलट जाएगा। उन्हें शर्मिंदगी का अनुभव होगा। और आज भी, पश्चिमी सभ्यता में, निश्चित रूप से, यहूदियों और फिर ईसाइयों की परंपरा से प्रभावित होकर, वह नग्नता जिसे हम बाइबल में अन्यत्र पाते हैं, मानवता की स्वच्छंदता को व्यक्त करने के लिए उपयोग की जाती है।

और फिर, मैं दोहराना चाहता हूँ और कहना चाहता हूँ कि नग्नता अपने आप में, आप देखिए, ईश्वर द्वारा बनाए गए पुरुष और महिला को नग्न करना है। नग्नता अपने आप में पापपूर्ण नहीं है। यह तब होता है जब नग्नता सीमा से बाहर होती है, और नग्नता को ढकने के लिए आवश्यक वस्त्र वह तरीका बन जाता है जिसे ईश्वर ने उन पुरुषों और महिलाओं के लिए इरादा किया है जिन्होंने ईश्वर के खिलाफ पाप किया है, बेशक, कपड़े पहनें।

खैर, अध्याय 3 हमें बगीचे में एक नए और अप्रत्याशित भागीदार के पास लाता है। इसलिए अध्याय 3, श्लोक 1 में, हम अब सर्प को पढ़ते हैं, और हम देखते हैं कि यह एक नया प्रकरण शुरू कर रहा है। अब, सर्प भगवान द्वारा बनाए गए किसी भी जंगली जानवर की तुलना में अधिक चालाक और अधिक चतुर था।

और उसने स्त्री से कहा, क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा है कि तुम बगीचे के किसी भी पेड़ से मत खाना? तो, चलिए फिर शुरू करते हैं कि साँप क्या है। हम यह भी कह सकते हैं कि साँप कौन है? चालाक, बनाया हुआ, और फिर यह तथ्य कि साँप बोलता है और स्त्री को धोखा देता है, का क्या मतलब है। तो, अध्याय 3 में यह श्लोक हमें सृजित व्यवस्था में एक ऐसे बदलाव से परिचित कराता है जो अपनी तबाही में ब्रह्मांडीय है।

तो, यहाँ मेरे मन में जो बात है वह यह है कि ऐसा लगता है कि हर पीढ़ी में, एक भयावह, प्रलयकारी घटना होती है जो उस पीढ़ी को चिह्नित करती है। उदाहरण के लिए, मेरी माँ और पिताजी महानतम अमेरिकी पीढ़ी का हिस्सा थे, जिसे कभी-कभी कहा जाता है, क्योंकि वे महान द्वितीय युद्ध से गुज़रे थे। उस पीढ़ी को चिह्नित करने वाली बात 7 दिसंबर, 1941 को पर्ल हार्बर में हुई घटना थी, जब जापानियों ने पर्ल हार्बर पर बमबारी की थी, और द्वितीय विश्व युद्ध के साथ युद्ध छिड़ गया था, दूसरा विश्व युद्ध।

अब, जब बात मेरी पीढ़ी की आती है, तो मुझे लगता है कि सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक 1963 में हुई होगी, राष्ट्रपति जॉन कैनेडी की हत्या। शायद 1968 में मार्टिन लूथर किंग की हत्या और जॉन कैनेडी के भाई रॉबर्ट कैनेडी की हत्या। वियतनाम युद्ध में 1968 के टेट आक्रामक नामक प्रमुख व्यवधान को इंगित किया जा सकता है।

या, हमारे श्रोताओं की पीढ़ी के बहुत से लोगों के करीब जाकर, 2001 में जो हुआ, 9/11 की घटना, जब हमारे पास आतंकवादी थे जिन्होंने दो टावरों, पेंटागन को नष्ट कर दिया, और फिर विनाश का प्रयास किया जिसके परिणामस्वरूप पेंसिल्वेनिया में चौथा विमान नीचे गिर गया। इसलिए, मैं जो कहना चाह रहा हूँ, वह यह है कि प्रत्येक पीढ़ी, निस्संदेह, यह वर्तमान युवा पीढ़ी हमेशा महामारी, महामारी से पहले और महामारी के बाद की घटनाओं को याद रखेगी। और यह वर्तमान पीढ़ी को चिह्नित करेगा जब तक कि भविष्य में और भी अधिक व्यवधान और आघात न हो।

खैर, जब उत्पत्ति के अध्याय 3 की बात आती है, तो यह मानव इतिहास में मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंकन है। और इसीलिए आप धर्मशास्त्रियों को पतन-पूर्व और पतन-पश्चात की दुनियाओं के बारे में बात करते हुए सुनेंगे, ठीक वैसे ही जैसे कोई बाढ़-पूर्व और बाढ़-पश्चात की दुनियाओं के बारे में बात कर सकता है। मेरा मतलब एक ब्रह्मांडीय आघात से है जो परमेश्वर द्वारा स्थापित रिश्तों में हुए नाटकीय और दर्दनाक मतभेदों के कारण हुआ।

सद्भाव और सौंदर्य के अध्याय 2 में, अब हम इसे उलट देंगे। इसलिए, हमें तब ध्यान केंद्रित करना चाहिए और इस बगीचे में क्या होता है, इस पर ध्यान देना चाहिए। अब, साँप।

ध्यान दें कि सर्प को परमेश्वर ने बनाया है, प्रभु परमेश्वर ने बनाया है। तो सर्प परमेश्वर का एक स्वतंत्र, बराबर प्रतिद्वंद्वी नहीं है, बल्कि अंततः परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन है, जैसा कि हमने उत्पत्ति अध्याय 1 में पाया, जहाँ

श्लोक 2 की अराजकता जिसका वर्णन किया गया है वह परमेश्वर की आत्मा की मँडराती उपस्थिति के अधीन है। यहाँ, यह सर्प अभी भी अंततः परमेश्वर की संप्रभु इच्छा और उद्देश्यों के अधीन है।

सर्प की अलग-अलग तरह से व्याख्या की गई है। इसलिए, आइए देखें कि सर्प कौन है और क्या है। अब याद रखें, इस कथा में, यह स्त्री के विरुद्ध इस शत्रुता और परमेश्वर के विरुद्ध इस शत्रु को एक पशु सर्प के रूप में वर्णित करता है।

इसमें विशेष रूप से शैतान का उल्लेख नहीं है। लेकिन जब आप साँप के व्यवहार और चरित्र को लेते हैं और उसकी तुलना शैतान नामक दुष्ट प्राणी से करते हैं, तो आपको पर्याप्त समानता दिखाई देती है जो यह सुझाव देगी कि साँप शैतान का प्रतिनिधि है। प्रेरित पौलुस ने साँप की व्याख्या शैतान के रूप में की, जैसा कि सभी यहूदी और ईसाई व्याख्याकारों ने किया था।

रोमियों 16, पद 20, रोमियों 16, पद 20, शांति का परमेश्वर जल्द ही शैतान को आपके पैरों तले कुचल देगा। अब, यह स्पष्ट रूप से अध्याय 3, पद 15 को संदर्भित करता है। खैर, आपको याद होगा कि यह सर्प की संतान और स्त्री की संतान के बीच लड़ाई की बात करता है।

और हम आयत 15 में पढ़ते हैं, आयत के अंतिम भाग में। वह, जो स्त्री का वंश है, तुम्हारा सिर कुचल देगा। लेकिन, फिर भी, साँप का वंश छुड़ानेवाले की एड़ी पर डसेगा।

प्रेरित पौलुस के मन में यही बात है। वह कहता है, हमारे प्रभु यीशु की कृपा तुम्हारे साथ रहे। इसी तरह सभी यहूदी और ईसाई व्याख्याकारों ने साँप को शैतान का प्रतीक समझा है।

एक समझ यह है कि यहाँ शैतान, साँप, साँप, मुझे कहना चाहिए, प्राचीन दुनिया और बाइबल में ज्ञान या बुराई की अस्पष्टता के साथ प्रतिनिधि है। यही बात न्यू इंटरनेशनल वर्जन में स्थापित की गई है: पाठक दुनिया के किसी भी जंगली जानवर की तुलना में अधिक चालाक, कहें तो कुशल था। तो यह साँप का सकारात्मक पक्ष है, जिसे प्राचीन निकट पूर्व में बहुत महत्व दिया जाता था।

आपको याद होगा कि यीशु ने साँपों की तरह बुद्धिमान होने की बात कही थी। लेकिन, निश्चित रूप से, एक नकारात्मक दृष्टिकोण यह भी है कि साँप दुष्ट था और परमेश्वर का विरोधी था और फिर बुरे परिणाम लाएगा। इस्राएल में, जो कुछ भी साँप की तरह ज़मीन पर रेंगता था उसे अशुद्ध माना जाता था और उसे खाया नहीं जा सकता था।

इसलिए, मुझे बिना किसी संदेह के लगता है कि जो लोग उत्पत्ति के विवरण के पहले पाठक होंगे, वे समझेंगे कि साँप को ईश्वर और मानवता के महान शत्रु तथा स्वयं इस्राएल के शत्रु के रूप में कथा में पेश किया गया है। और मैं आपको, एक पाठक के रूप में, अध्याय 3, श्लोक 1 में उल्लेख कर सकता हूँ, यह एक कथा है जिसे आप पढ़ते हैं। यह वह वर्णन नहीं है जिसे महिला पढ़ती है।

इसलिए, हमें महिला पर एक फायदा है, क्योंकि इसे पढ़ते समय, हम बहुत सावधानी से यह आंकलन करने जा रहे हैं कि साँप क्या कहना चाहता है, और हम,

पाठकों के रूप में, साँप के बुरे इरादे के बारे में बहुत संदिग्ध होने जा रहे हैं। अब, एक सवाल अक्सर पूछा जाता है कि साँप कैसे बोल सकता है? उसने महिला से कहा, अच्छा, साँप, बेशक, बोलते नहीं हैं। और मुझे नहीं लगता कि यह मानने का कोई कारण है कि साँप को बोलने की भूमिका निभानी चाहिए।

अब, इस साँप के बारे में मतभेद हैं। एक यह होगा कि साँप वास्तव में बोलता था क्योंकि साँप एक राक्षस के कब्जे में था। एक और समझ, जो मुझे लगता है कि और भी शक्तिशाली है, जो शैतान की उपस्थिति का संकेत देती है, वह एक साँप का प्रतीकात्मक उपयोग है, जिसे मानवता के कट्टर दुश्मन, अच्छाई और समृद्धि के कट्टर दुश्मन के रूप में देखा गया है।

तो, सर्प, एक प्रतीक के रूप में, पाठक के लिए बहुत प्रभावी होगा। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि सर्प केवल एक प्रतीक है, बल्कि यह एक प्रतिनिधि भाषा या शब्द या छवि है, मुझे कहना चाहिए, एक वास्तविकता, एक ऐतिहासिक वास्तविकता, और वह है एक दुष्ट प्राणी की उपस्थिति। इसलिए, जैसा कि आप जानते हैं, कुछ व्याख्याकार हैं जो सोचते हैं कि सर्प बुराई के सिद्धांत का प्रतिनिधि है, और यह एक अमूर्त विचार है।

अमूर्त विचार एक ऐसी अवधारणा की तरह होगा जो किसी वास्तविक चीज़ में विशेष रूप से विशिष्ट नहीं है। इसलिए, अमूर्तता के कुछ पहलू, या अमूर्तता में, ईमानदारी, अच्छाई और कविता होगी, वे अमूर्तताएं हैं। लेकिन ठोस क्या है? विशिष्ट क्या है? वास्तविक क्या है? यदि आप अमूर्त कविता लेते हैं, तो ठोस कवि द्वारा लिखी गई कविता होगी।

तो, सवाल यह है कि क्या हमारे पास कोई अमूर्त चीज़ है, या हमारे पास कोई ठोस, वास्तविक अस्तित्व है? और मुझे लगता है कि इसका समाधान हमें अध्याय 3, श्लोक 14 में मिलता है, जहाँ यह एक प्राणी के जीवनकाल की भाषा का उपयोग करता है। यह श्लोक 14 के अंत में कहता है, आपके जीवन के सभी दिन, साँप के इतिहास और जीवनकाल के संदर्भ में। और फिर यह वही भाषा है जिसका उपयोग आप श्लोक 17 में मनुष्य के विरुद्ध न्याय की भविष्यवाणी में पाएंगे, जहाँ यह श्लोक 17 के अंत में भी कहता है, आपके जीवन के सभी दिन।

और, बेशक, यह ठोस है। मनुष्य, आदम, एक ठोस, जीवित, व्यक्तिगत प्राणी है। और यही वह है जो हमें साँप के साथ मिलता है, जो एक वास्तविक दुष्ट प्राणी का प्रतिनिधि है।

अब, बुराई की उत्पत्ति के रहस्य के बारे में भी चर्चा है। और मैं रहस्य शब्द का उपयोग इसलिए करता हूँ क्योंकि बाइबल स्पष्ट रूप से बुराई की उत्पत्ति के बारे में नहीं कहती है। यहाँ यह ज़रूर कहा गया है कि यह ईश्वर के संप्रभु नियंत्रण में आता है, कि यह ईश्वर के समान सर्वशक्तिमान तल पर नहीं है, कि हमारे पास अच्छाई और बुराई के बीच कोई सच्चा द्वैतवाद नहीं है।

लेकिन जब बुराई के स्रोत की व्याख्या करने की बात आती है, तो बाइबल चुप रहती है। जैसा कि मैंने पिछले अवसर पर कहा था, परमेश्वर बहुत सी बातें प्रकट करता है, और हम परमेश्वर, बुराई और वास्तविकता के संचालन के तरीके के बारे में बहुत सी बातें जान सकते हैं क्योंकि परमेश्वर उसका पर्दाफाश करता है। लेकिन वह हमें बुराई की उत्पत्ति के बारे में नहीं बताता है, और वह इसकी जिम्मेदारी नहीं लेता है।

वह कभी भी बुराई की जिम्मेदारी नहीं लेता। अब, वह बुराई के परिणामों की ज़िम्मेदारी लेता है। उदाहरण के लिए, वह मृत्यु या महामारी या किसी अन्य प्रलयकारी घटना, जैसे उत्पत्ति अध्याय 6 से 8 में बाढ़, के लिए जिम्मेदार है। लेकिन वह एक सिद्धांत के रूप में बुराई की

जिम्मेदारी नहीं ले रहा है।

जब हम देखते हैं कि पद 1 में सर्प ने स्त्री से क्या कहा, तो क्या परमेश्वर वास्तव में कहता है कि तुम्हें बगीचे के किसी भी पेड़ से नहीं खाना चाहिए? अब, आइए इसकी सावधानीपूर्वक तुलना करें। याद रखें कि वह चालाक है। वह चतुर था, सर्प।

अध्याय 2, श्लोक 16 और 17 में हम जो पाते हैं, वह आज्ञा है, विशिष्ट निषेध है, जो सर्प के मन में है। और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, तुम बगीचे के किसी भी पेड़ से खाने के लिए स्वतंत्र हो। मैं चाहता हूँ कि तुम ध्यान दो कि इस आज्ञा में परमेश्वर कितना उदार और उदार है।

सबसे पहले, सकारात्मक पहलू पर। पद 16 का अधिकि विशिष्ट, शाब्दिकि अनुवाद होगा, आप हैं, आप कर सकते हैं, क्योंकि यह अनुमति है, आप निश्चित रूप से बगीचे में किसी भी, किसी भी पेड़ से खा सकते हैं। पद 17 एक प्रतिबंध देता है लेकिन आपको अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ से नहीं खाना चाहिए, क्योंकि जब आप इसे खाते हैं, तो आप निश्चित रूप से मर जाएंगे।

तो, यह उलटा हो गया। साँप स्त्री को बहकाता है और छल-कपट के ज़रिए उसे अपने जाल में फँसा लेता है। अब, क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा, बगीचे में पेड़?

उसने यह नहीं कहा कि तुम्हें बगीचे के किसी भी पेड़ से नहीं खाना चाहिए। इसलिए, वह स्त्री के सामने एक विचार रखकर उसे लुभा रहा है। ध्यान दें कि वह नकारात्मक शब्द का प्रयोग करता है। तुम्हें खाना नहीं चाहिए।

हिब्रू निर्माण में, नकारात्मक शब्द सबसे पहले पंजे के सिर पर आता है। और फिर यह कहता है, बगीचे के किसी भी पेड़ से। यहाँ फिर से, ईश्वर की ओर से उदारता से कंजूसी की ओर एक उलटफेर है।

महिला जवाब देती है, और पद 3 में महिला की कुछ आलोचना की गई है, जहाँ वह बगीचे के बीच में इस पेड़ के लिए भाषा जोड़ती है, तुम्हें इसे छूना नहीं चाहिए। जब आप अध्याय 2 के पद 17 से तुलना करते हैं, तो आपके पास वास्तव में ऐसा नहीं है। तो, क्या वह आदेश में परमेश्वर द्वारा कही गई बातों में कुछ जोड़ रही है? खैर, हमें अब याद रखना होगा कि जब उत्पत्ति के वृत्तांत के पहले पाठकों के दृष्टिकोण से यह समझने की बात आई कि क्या शुद्ध और अशुद्ध हैं, तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला होगा कि यह सराहनीय था क्योंकि उन चीजों को छूने पर भी प्रतिबंध है जो परमेश्वर के साथ जीवन के लिए भद्दी या अनुचित थीं।

यहाँ पर वह कहती है कि, आपको इसे छूना नहीं चाहिए, इसे महिला की नकारात्मक आलोचना के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, क्योंकि वह यह कहने के लिए अतिरिक्त कदम उठा रही है कि, हम इसे छू भी नहीं सकते। हम इसके आसपास भी नहीं जा सकते। हमें बहुत सावधान रहना था।

और यही बात परमेश्वर कह रहा है। खैर, तब साँप काफी साहसी है। वह अपने धोखेबाज़ स्वभाव से साहसी अस्वीकृति की ओर बढ़ता है।

नहीं, तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे। और यह अध्याय 2, श्लोक 17 में परमेश्वर द्वारा पहले से बताई गई बात का स्पष्ट विरोधाभास है। फिर वह इसका सुपष्टीकरण देता है कि परमेश्वर जानता है कि जब तुम इसे खाओगे, तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे और अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त करोगे।

और, बेशक, प्राचीन दुनिया में, देवताओं द्वारा भोगी जाने वाली अनंत जीवन की खोज में बहुत रुचि थी। तो, इसका निहितार्थ यह है कि ईश्वर स्वार्थी है। ईश्वर स्व-हित में है।

वह आपके लिए अच्छा नहीं कर रहा है। लेकिन साथ ही, वह विपरीत दिशा में कह रहा है, यदि आप खाएंगे, तो आपको लाभ होगा और आपको ईश्वर की बुद्धि प्राप्त होगी, जिससे आप अच्छाई और बुराई को जान पाएंगे। और आपको वह जीवन मिलेगा जो निहित है।

खैर, किसी तरह से, साँप सही है। लेकिन वह पूरी कहानी नहीं बताता। वह कहानी का केवल सकारात्मक पक्ष बताता है।

लेकिन हाँ, उन्हें अच्छाई और बुराई को जानने में कुछ हद तक बुद्धि और अनुभव प्राप्त होगा। वे ऐसे निर्णय और फैसले लेने में सक्षम होंगे जो अच्छे या बुरे के लिए होंगे।

और वे अपनी मासूमियत खो देंगे क्योंकि, जैसा कि हम देखते हैं, वे अपनी नग्नता को पहचानते हैं। यही वह चीज़ है जो वे खो देंगे - अपनी मासूमियत।

यह नकारात्मक पक्ष है। लेकिन, महत्वपूर्ण बात यह है कि वे मरेंगे। यह अनंत जीवन पाने के लक्ष्य के विपरीत है।

वे मर जाएंगे। और इसलिए जब अध्याय 3, श्लोक 22 की बात आती है तो यही बात ध्यान में आती है। यह पतन के बाद की बात है।

यह न्याय की भविष्यवाणियों के बाद है। और फिर श्लोक 22 में। और प्रभु परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य अब हम में से एक के समान हो गया है, और अच्छाई और बुराई को जानता है।

तो, किसी तरह से, यह स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट नहीं है। साँप सही था। वह पुरुष और स्त्री से कहता है, तुम इस फल को खाओ, और तुम अच्छे और बुरे को जान जाओगे।

और इसलिए, उस हद तक, इस ज्ञान के परिणाम जो अवैध रूप से अवैध रूप से प्राप्त किए जाते हैं, मृत्यु में परिणत होते हैं। नीतिवचन की पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर बुद्धि प्रदान करता है। वह बुद्धि का स्वामी है और उसके पास बुद्धि है।

और जो लोग उससे बुद्धि चाहते हैं, उन्हें वह बुद्धि बांटता है। और यह बुद्धि परमेश्वर के भय, आराधना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा, आज्ञाकारी भावना का एक हिस्सा मानी जाती है। और परमेश्वर उदारता से बुद्धि प्रदान करता है।

जैसा कि हम याकूब के अध्याय 1 में पाते हैं, जहाँ अगर हम परीक्षा और कठिनाई के संदर्भ में जीने के लिए परमेश्वर से बुद्धि माँगेंगे, तो वह हमें उदारता से इसे प्रदान करेगा। इसलिए, परिणामस्वरूप, श्लोक 22 में, यह मानवता कहता है, मनुष्य को अपना हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष से फल लेने और खाने और हमेशा जीवित रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। इसलिए, पुरुष और स्त्री को उनकी अवज्ञा के कार्य के उचित परिणामों को भुगतने के लिए, उन्हें निष्कासित किया जा रहा है।

श्लोक 23. इसलिए, प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य और, निश्चित रूप से, उसके साथ की स्त्री को अदन के बगीचे से निकाल दिया ताकि वे उस भूमि पर काम करें जहाँ से उसे निकाला गया था। यह एक प्रतिध्वनि है, है न? उसने कहा कि उसे मिट्टी से निकाला गया था और अब उसे निकाल दिया जाएगा।

जीवन के वृक्ष तक पहुँच से। वह और स्त्री हमेशा से बगीचे के बाहर रहे हैं। आप बगीचे के बाहर पैदा हुए थे।

मैं बगीचे के बाहर पैदा हुआ था। कुछ नाटकीय रूप से बदल गया है। ब्रह्मांडीय व्यवधान, आघात, इतना अधिक कि भगवान नहीं चाहेंगे कि पुरुष और महिलाएं इस टूटे हुए रिश्ते में हमेशा के लिए रहें।

पुरुष और स्त्री के लिए सबसे अच्छी बात वह थी जो परमेश्वर ने बाहर से सोची थी: पुरुष और स्त्री को इस फलदायी जीवन और उसके साथ इस व्यक्तिगत संबंध से आशीर्वाद देना और अपने निर्माता का आनंद लेना। इसलिए, पुरुष और उसकी पत्नी को निर्वासित करके, उसने एक ऐसा तरीका शुरू किया जिसके द्वारा परमेश्वर, हाँ, उन्हें मृत्युदंड देगा, लेकिन साथ ही उस निर्णय को पलटने के लिए एक उद्धारकर्ता के माध्यम से हस्तक्षेप करेगा जो स्त्री की संतान से आता है। इसलिए श्लोक 24 में, जब उसने पुरुष को बाहर निकाल दिया, तो उसने स्वर्ग के प्राणियों, करूबों और एक ज्वलंत तलवार को आगे-पीछे चमकते हुए ईडन गार्डन के पूर्व की ओर जीवन के वृक्ष के रास्ते की रक्षा के लिए रखा।

इसलिए हमेशा से ही पुरुष और महिलाएँ हमारे पहले माता-पिता के पतन से प्रभावित रहे हैं। अब जब हम आयत 6 से 7 को देखते हैं, तो यहाँ हमें वह आकर्षण मिलता है जिसका वर्णन तब किया गया जब स्त्री ने देखा कि पेड़ का फल खाने में अच्छा और देखने में अच्छा और बुद्धि प्राप्त करने के लिए मनभावन भी है। उसने कुछ फल लिया और खा लिया।

और ध्यान दें कि उसने इसे अपने पति को दिया, जो उसके साथ था, और उसने इसे खा लिया। खैर, अटकलों के लिए बहुत जगह है, लेकिन यह सब अटकलें ही हैं। हम अटकलें लगा सकते हैं: क्या महिला को निषेध के बारे में पता था? आखिरकार, अध्याय 2 में निषेध पुरुष को दिए जाने के लिए निर्धारित किया गया था।

और फिर यहाँ एक और अटकलबाज़ी भरा विचार है। साँप और आदमी के बीच इस संवाद के दौरान पति किसी हद तक महिला के साथ मौजूद था? मुझे

लगता है कि हम कुछ हद तक विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आदमी ने फल खाने के बारे में कोई संकोच नहीं दिखाया, जबकि कम से कम हम यह तो कह सकते हैं कि महिला को धोखा दिया गया था। लेकिन आदमी, यह बहुत संक्षेप में कहता है, उसने बस भगवान की आज्ञा के खिलाफ़ जानबूझकर विद्रोह करके इसे खा लिया।

अब, ईसाई धर्मशास्त्र में मूल पाप का विचार रहा है। और मूल पाप को कई लोगों द्वारा गलत समझा गया है क्योंकि कुछ लोग सोच सकते हैं कि मूल पाप केवल पहले पाप को संदर्भित करता है, और वास्तव में ऐसा ही है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पाप के स्रोत के बारे में बात कर रहा है, और वह यह है कि पुरुष और महिला पापी बन गए, और पापी होने के नाते वे पाप पैदा करते हैं।

और यही हमारा मतलब है: बगीचे के बाहर पैदा हुए सभी पुरुषों और महिलाओं के चरित्र और स्वभाव ने अपने माता-पिता के पाप की प्रकृति को ग्रहण कर लिया है। और इसलिए हम इसे उत्पत्ति में ही देखते हैं, जहाँ अध्याय 3 और 4 के बीच एक कारण और प्रभाव है, जहाँ कैन द्वारा अपने भाई हाबिल के खिलाफ़ की गई हत्या है। यह सबसे भयानक पापों में से एक रहा होगा जो उत्पत्ति के पाठकों, पहले पाठकों की नज़र में, उनकी सामुदायिक वफादारी के कारण किया जा सकता था।

भ्रातृहत्या, अपने रिश्तेदारों को मारना, एक भयानक विश्वासघात होता जो समुदाय की ओर से सबसे कठोर उपचार प्रतिक्रिया के योग्य होता। और इसीलिए आप पाएंगे कि जब पूर्व नियोजित हत्या की बात आती है, जैसे कि हम यहाँ कैन के साथ हाबिल के खिलाफ़ पाते हैं, तो समुदाय द्वारा दोषी पक्ष के खिलाफ़ मृत्यु की सजा दी जाती है। जब हम आगे के अध्यायों को पढ़ना जारी रखते हैं, तो हम पाएंगे कि पाप, दुष्टता और गंभीरता में इस हद तक वृद्धि हुई है कि भगवान को ऐसी बाढ़ लानी चाहिए जो ऐसी दुष्टता को समाप्त कर दे।

यह इतना महामारी बन गया था, इतना सार्वभौमिक। इसलिए, उत्पत्ति में ही, पुरुष और महिला के पापी बनने के आख्यान में, दूसरे शब्दों में, पाप का स्रोत, पाप में जन्म लेना, पाप करना और पाप करना, हम इस शिक्षा को पाते हैं। यह केवल बाद के ईसाई धर्मशास्त्रियों का मामला नहीं है जो इस आख्यान की गलत व्याख्या करते हैं और इस गलत व्याख्या से मूल पाप की अवधारणा को आकर्षित करते हैं।

फिर अध्याय दो और तीन में कहानी के वर्णनात्मक स्वरूप पर नज़र डालें। जब हम अध्याय दो को देखते हैं, तो हमें एक क्रम मिलता है जो ईश्वर से शुरू होता है, जिसने पुरुष को बनाया, और जिससे पुरुष की उत्पत्ति हुई, स्त्री। फिर, पुरुष और स्त्री को मिलकर पशु जगत पर शासन करना है और उसे अपने अधीन करना है, जिसमें सर्प भी शामिल है।

यही क्रम है। ईश्वर, मनुष्य, फिर स्त्री, और अंतिम सर्प। हालाँकि, अध्याय तीन में यह उलटा है।

तो, हमारे पास सर्प है जो स्त्री पर शासन करता है। और न्याय के लेखों में, हम देखेंगे कि स्त्री अपने पति, पुरुष के विरुद्ध विद्रोही है। लेकिन अंत में, और सबसे महत्वपूर्ण बात, पुरुष, आप देखिए, परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी है।

यह कथात्मक बनावट और न्याय के वचनों में स्पष्ट रूप से बताया गया है। यदि आप उन्हें श्लोक 14 से 19 में देखें, तो सर्प अब स्त्री की संतान के अधीन हो गया है। और हमें बताया गया है कि श्लोक 16 में स्त्री पति के अधीन होगी, जहाँ लिखा है, तेरी अभिलाषा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर शासन करेगा।

और फिर, श्लोक 17 और उसके बाद, वहाँ यह वर्णन किया गया है कि अब मनुष्य को परमेश्वर के अधीन कर दिया गया है क्योंकि वह उस मिट्टी में वापस चला जाएगा जिससे उसे निकाला गया था। प्रत्येक मामले में, हम पाएंगे कि न्याय की भविष्यवाणी व्यक्ति की किसी विशेषता को लेती है, या साँप के मामले में, और उस आकृति के विरुद्ध न्याय लाती है। इसलिए साँप, जिस तरह साँप सभी जानवरों में सबसे चालाक था, अब सभी जानवरों में सबसे नीच माना जाता है क्योंकि वह अपने पेट के बल रेंग रहा है, जो स्पष्ट रूप से अपमान का संकेत है, धूल खा रहा है।

धूल खाना अब हमें याद दिलाएगा कि कैसे वह मनुष्य की रचना को धूल से उलटने के लिए जिम्मेदार है, और धूल झाड़ने के लिए, वह वापस आएगा। और फिर स्त्री के साथ युद्ध है। बेशक, पद 16 में स्त्री के खिलाफ न्याय के बारे में जो शिक्षाप्रद है वह यह है कि भले ही उसे प्रसव पीड़ा होगी और वह अपने पति के अधीन हो जाएगी, पद 16 में, वह बच्चों को जन्म देने वाली है।

यह ईश्वर के आशीर्वाद का हिस्सा है जो निरंतर जारी रहेगा। फिर वह आदमी जो ज़मीन पर काम करता था, आप देखेंगे कि अब उसे दर्द से काम करना होगा, ठीक वैसे ही जैसे महिला को प्रसव पीड़ा होती है। आदमी भोजन, जीविका पैदा करेगा, जैसा कि ईश्वर चाहता है कि वह जीवित रहे, लेकिन अब यह आपके माथे के पसीने से होगा।

और फिर, आखिरकार, उसकी मृत्यु के बाद, वह फिर से अधीन हो जाएगा। इसलिए, परमेश्वर, अपने न्याय के वचनों में, पुरुष और स्त्री के पाप के परिणामस्वरूप जो कुछ बाधित हुआ था, उसे फिर से व्यवस्थित करता है। अब, एक सवाल जिसका हमें अनुसरण करने की आवश्यकता है वह यह है कि ईसाई धर्मशास्त्र ने मूल पाप को कैसे समझा।

इस मामले में सबसे अच्छा मार्ग रोमियों अध्याय 5, पद 12 से 21 होगा। रोमियों अध्याय 5, 12 से 21। इसलिए, जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस तरह, मृत्यु सभी लोगों में आ गई क्योंकि सभी ने पाप किया।

यह तो तय है कि पाप व्यवस्था दिए जाने से पहले भी दुनिया में था, लेकिन जहाँ व्यवस्था नहीं है, वहाँ पाप का आरोप किसी के खाते में नहीं लगाया जाता। तो, आइए यहीं रुकें और देखें कि प्रेरित पौलुस पाप की सार्वभौमिकता का वर्णन कर रहा है जो एक व्यक्ति, आदम के माध्यम से दुनिया में आया। यह स्पष्ट रूप से उसके मन में है, लेकिन फिर भी वह यह स्पष्ट करना चाहता है कि जब मूसा ने दस आज्ञाएँ दीं, तब पाप दुनिया में नहीं आया।

पाप तो पहले से ही संसार में था, इसलिए पाप की उत्पत्ति बिगीचे में मानवता में हुई। क्योंकि, हाँ, क्योंकि पुरुष और महिलाएँ मर गए। आदम और हव्वा मर गए।

अध्याय 5 में, हमारे पास आदम और उसके बाद उसके बेटे शेत की रचना की सूची है। आदम और शेत की संतानों की इस सूची में कहा गया है कि प्रत्येक मामले में व्यक्ति की मृत्यु हुई। इसलिए, श्लोक 5 में, यह कुल मिलाकर कहता है, आदम 930 साल तक जीवित रहा, और फिर वह मर गया, और फिर वह मर गया, और फिर वह मर गया, अध्याय 5 की वंशावली के माध्यम से। और मुझे लगता है कि प्रेरित पौलुस के मन में निश्चित रूप से यही था जब वह श्लोक 14 में कहता है, हालाँकि कोई मूसा का कानून नहीं था। फिर भी, मूसा के समय से मृत्यु ने राज किया, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिन्होंने आज्ञा तोड़कर पाप नहीं किया, जैसा कि आदम ने किया था।

खैर, पॉल के मन में दस आज्ञाओं में से एक है। वह एक विशिष्ट कानून, एक संहिता के बारे में बात कर रहा है, और मुझे नहीं लगता कि वह किसी भी तरह से यह कह रहा था कि कोई निषेध नहीं है, जैसे कि हम अच्छे और बुरे के पेड़ से खाने से मना करते हैं। तो अब हमें श्लोक 14 में समझना है कि आने वाले व्यक्ति का प्रकार या प्रतिरूप कौन है।

तो अब वह आदम, पहले मानव, और फिर प्रभु यीशु मसीह, जो आने वाले हैं, की तुलना और अंतर करने जा रहा है। और वह इसे स्पष्ट करता है और निर्दिष्ट करता है, श्लोक 15, लेकिन उपहार अपराध की तरह नहीं है, क्योंकि यदि एक आदमी के अपराध से कई लोग मर गए, तो भगवान की कृपा और उपहार जो एक आदमी की कृपा से आया, वह यहाँ है, यीशु मसीह। वह नया आदम है, अंतिम आदम।

तो, अगर आदम के अपराध से इतना कुछ प्रभावित हुआ, तो यीशु मसीह की ओर से मृत्यु के बाद जीवन का उपहार प्रदान करने का अनुग्रहपूर्ण कार्य कितना अधिक धन्य है? इसलिए, हम पद 8 में देखते हैं, परिणामस्वरूप, जैसे एक अपराध के परिणामस्वरूप सभी लोगों के लिए निंदा हुई, वैसे ही एक धार्मिक कार्य के परिणामस्वरूप सभी लोगों के लिए जीवन में औचित्य सिद्ध हुआ। क्योंकि जैसे एक मनुष्य की अवज्ञा के कारण बहुत से लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता के कारण बहुत से लोग धर्मी ठहरेंगे।

तो यहाँ हमारे पास सामूहिक एकजुटता का विचार है, जो हमें बाइबल में मिलता है, जो प्राचीन दुनिया में लोगों की मानसिकता और रीति-रिवाज का हिस्सा था, और यह कि एक व्यक्ति पूरे समुदाय का प्रतिनिधित्व कर सकता है। आदम पूरे मानव परिवार का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि उसी से सभी मानव परिवार आएंगे। और यीशु मसीह वह है जो उन सभी मानव परिवार का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रभु यीशु मसीह में अपने विश्वास के कारण परमेश्वर की कृपा प्राप्त करते हैं, जो तब परमेश्वर और उन सभी के बीच प्रतिस्थापन प्रायश्चित या मेल-मिलाप प्रदान करता है जो मसीह में हैं।

मैं सिर्फ हर इंसान की बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उन सभी इंसानों की बात कर रहा हूँ जो मसीह में हैं, और यही अंतर है। आदम में रहने वाले सभी लोग, जिनमें हम में से हर एक शामिल है, पापी पैदा होंगे, और इसका सबूत हमारी पापपूर्णता, हमारे पाप होंगे। और फिर मसीह यीशु में, हम नए सिरे से जन्म लेते हैं, जैसा कि हम यूहन्ना अध्याय 3 में पाते हैं, मसीह यीशु में नए जीवन का पूरा विचार जिसका हम आनंद लेते हैं।

इसलिए, हम पाते हैं कि जो लोग मसीह में हैं, उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पिता के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के आधार पर धर्मी बनाया या घोषित किया जाएगा। श्लोक 20, व्यवस्था इसलिए लाई गई ताकि अपराध बढ़ जाए। दूसरे शब्दों में, व्यवस्था ने एक व्यक्ति को पापी बना दिया।

व्यवस्था ने मानवीय पाप को उजागर किया और मानवता को पाप करने का अवसर या अवसर दिया। लेकिन जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा। ताकि जैसे पाप ने मृत्यु में राज्य किया, वैसे ही अनुग्रह भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन लाने के लिए धार्मिकता के द्वारा राज्य करे।

इस तरह से मूल पाप और सहवर्ती मूल अपराध को समझा जाना चाहिए। जब हम अगले सत्र के लिए वापस आएंगे, तो हम अध्याय 3 और उसके धार्मिक निहितार्थों के साथ आगे बढ़ेंगे, साथ ही यह भी समझेंगे कि बगीचे के बाहर क्या हुआ था, क्योंकि हम बगीचे में हुए पाप के परिणामों को देखते हैं।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3बी, द गार्डन स्टोरी, उत्पत्ति 2:4-3:24 है। सत्र 3, भाग 2।